Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 3 | MARCH 2019

बीकानेर राज्य की सामाजिक , आर्थिक एवं सांस्कृतिक दशा का ऐतिहासिक अध्ययन : 18 वीं शताब्दी के विशेष संदर्भ में

डॉ. संतोष कुमारी [1]

[1] एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास, राजकीय महाविद्यालय, बावड़ी (जोधपुर)

ABSTRACT:

राष्ट्र के किसी भी राज्य का निर्माण उसकी सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं भौगोलिक दशाओं की समष्टि से होता है। बीकानेर भी भारत का एक ऐसा राज्य है जिसका संबंध इन समस्त गतिविधियों से लगातार जुड़कर चला है।

भौगोलिक स्थिति के अनुसार बीकानेर राज्य मरूप्रदेश में लगभग 27°12 और 30°12 उत्तरी अक्षांश और 72°12 से 75°42 पूर्वी देशान्तर के बीच विस्तारित है। राठौड सरदारों के आक्रमण से पूर्व यह प्रदेश जांगल देश' के नाम से जाना जाता था। इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल लगभग 23,317 वर्ग मील है। राजपूताना के राज्यों में क्षेत्रीय विस्तार की दृष्टि से बीकानेर का संभवतः दूसरा स्थान है। बीकानेर राज्य के उत्तर में फिरोजपुर, उत्तर-पूर्व में हिसार, उत्तर-पश्चिम में भावलपुर की सीमाओं तक इस मरू भूमि का भाग है। दक्षिण में जोधपुर, दक्षिण-पूर्व में जयपुर जिसे बागड़ के नाम से जाना जाता था और दक्षिण-पश्चिम में जैसलमेर राज्य स्थित हैं।

अर्थव्यवस्था किसी भी देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास की धूरी होती है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए जहां यह व्यवस्था पूर्णरूपेण कृषि पर आधारित थी वही मौसम पर भी पूर्णता निर्भर रही है इसमें विशेष योगदान उद्योगों का रहा है। बीकानेर में समाज के आर्थिक जीवन का प्रमुख आधार भूमि था। बीकानेर राज्य की सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशाएं भी युगानुकुल रही हैं । हालांकि समय के परिवर्तन के साथ-साथ उनमें विभिन्न बदलाव दृष्टिगोचर होते हैं लेकिन फिर भी इन सभी दशाओं में गत्यात्मकता परिलक्षित होती है। बीकानेर की सामाजिक व्यवस्था वैदिक कालीन वर्ण व्यवस्था पर आधारित रही है जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र चारों वर्णों की उपस्थिति थी। बाहरी आक्रमणों के कारण इस व्यवस्था में समय के साथ-साथ बदलाव आया। ब्राह्मणों को यज्ञ करने, क्षत्रियों को युद्ध करने और प्रशासन कार्य करने , वैष्णवों को व्यापार तथा खेती कार्य करने हेतु नियत किया गया लेकिन शूद्र वर्ण सेवा के कार्य में संलग्न रहा। समाज की वर्ण व्यवस्था का प्रभाव सामाजिक व्यवस्था पर पड़ा। संस्कृति किसी भी देश की समस्त व्यवस्थाओं जैसे खान पान, रहन सहन, वेशभूषा, भाषा, बोली, धर्म, स्तर, सभ्यता, शालीनता, वैचारिक दृष्टिकोण आदि सबकी परिचायक होती है। ठीक उसी प्रकार बीकानेर राज्य की संस्कृति भी उसकी समस्त विशिष्टताओं को सामने रखने में सक्षम है।

KEYWORDS:

बीकानेर राज्य, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, विकास, अवस्थिति ।

मूल आलेख

बीकानेर राज्य की सामाजिक दशाओं का ऐतिहासिक अध्ययन

बीकानेर की सामाजिक दशा का अध्ययन किया गया। अध्ययन से पता चलता है कि बीकानेर राज्य में शासक एवं सामन्त वर्ग के बाद राजकीय सेवारत एवं जागीर प्राप्त व्यक्तियों का जातियक्रम के अनुसार स्थान महत्वपूर्ण रहा। व्यक्ति का महत्व उसकी जाति पर निर्भर न रह कर उसके काम पर निर्भर था। जो जितना अच्छा कार्य करता था, उसको उतना ही सम्मान प्राप्त होता था । व्यक्ति की पहचान उसकी जाति के आधार पर न होकर उसके काम के आधार पर होती थी । इस प्रकार बीकानेर राज्य में निवास करने वाली अनेक जातियाँ एक-दूसरे को प्रभावित किए बिना नहीं रही थी राज्य की सामाजिक संरचना जातिय और व्यवसाय के आधार पर विभाजित थी जो अलग-अलग इकाइयों में विभाजित होने के पश्चात् भी एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित थी तथा एक समूह में रहती थी। उन समूह में रहने वाली जातियों के लिए मोहल्ला या गुवाड़ शब्द का प्रयोग मिलता है। प्रत्येक जाति के अपने अपने नियम एवं रीति-रिवाज प्रचलित थे, जिनका पालन करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य था । नियम को भंग करने पर जाति पंचायत द्वारा दण्ड दिया जाता था। इसके साथ इतनी जातियों मोहल्लों या गुवाड़ों में निवास करने पर भी धार्मिक विवादों व रीति-रिवाजों के आदान-प्रदान से तालमेल बना रहता था जो आपसी समन्वय एवं सोहार्द का परिचायक था। बीकानेर राज्य में जाति प्रधानता के कारण प्रत्येक जाति अपनी ही जाति के रीति-रिवाज एवं नियमों का पालन करती थी। यहाँ तक की स्वयं के व्यवसाय में विवाह किया जाता था। किसी अन्य व्यवसायों में करने पर भी जाति पंचायत द्वारा दण्डित किया जाता था । जो जातीय कट्टरता का प्रतीक है।

मध्यकाल के बीकानेर की सामाजिक व्यवस्था प्राचीन काल की वर्ण व्यवस्था पर आधारित थी तथा यहाँ कुछ विशिष्ट विशेषताएँ भी विद्यमान थीं। उदाहरण स्वरूप ग्राम समुदाय, बिरादरी जाति प्रथा, कृषक तथा दस्तकारों के मध्य घुले-मिले संबंध इत्यादि मुगलों के सम्पर्क ने यहाँ के राजाओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये। किन्तु वह सामान्य जन पर उनकी सामाजिक मान्यताओं पर प्रभाव पूर्ण रूप से नहीं छोड़ सके। 18वीं शताब्दी में भी जाति व्यवस्था का वही ढांचा विद्यमान रहा. जिसमें ब्राह्मण, राजपूत तथा महाजन ऊभी पायदान पर खड़े थे। ब्राह्मण जाति अपना प्रमुख स्थान रखती थी। ब्राह्मण समुदाय अध्यापन, पुरोहिताई इत्यादि द्वारा अपना जीवनयापन कर रहा था। लेकिन 18वीं शताब्दी की परिस्थितियों के कारण ब्राह्मणों ने विभिन्न व्यवसायों को करना शुरू कर दिया था।

उदाहरण के तौर पर ब्राह्मण कई उप जातियों में विभक्त थे। 18वीं शताब्दी के इस परिवर्तन के दौरान किस तरह से जातिय व्यवसायों में बदलाव आया तथा विभिन्न जातियाँ अपने जातिय व्यवसाय को छोड़कर अन्य जाति के धन्धों को अपनाने लगी जो उस समय की जातिय गतिशीलता के स्वरूप के महत्त्व को प्रकट करता है।

बीकानेर राज्य की आर्थिक दशा का ऐतिहासिक अध्ययन

बीकानेर की आर्थिक दशा को दो भागों में विभाजित किया गया है। मुगल साम्राज्य की अवस्थाओं तथा क्षेत्रीय राज्यों की विकसित परिस्थितियों के परिणामस्वरूप बीकानेर राज्य की अर्थव्यवस्था में राजनीतिक संबंधों के प्रभाव एवं भू-राजस्व व्यवस्था उसके मूल्यों तथा दरों की स्थिति और बड़े स्तर जोधपुर के हस्तक्षेप ने किस हद तक बीकानेर की भू-राजस्व व्यवस्था एवं अर्थव्यस्था को प्रभावित किया। भू-राजस्व व्यवस्था किसी भी राज्य की आय का प्रमुख साधन होने के साथ-साथ कृषि व्यवस्था से संबंधित एक मुख्य पहलू भी होता है जलवायु की विभिन्नता, वर्षा की अनिश्चितता, समय-समय पर पढ़ने वाले अकालों के कारण राज्यों की उपज अपर्याप्त एवं अनिश्चित होती थी। जिसका प्रभाव निश्चित रूप से भू-राजस्व व्यवस्था पर भी पड़ता था। परगना एक भू-राजस्व इकाई के साथ-साथ गाँव स्तर पर क्षेत्रीय इकाई के रूप में बनाया गया।

इसी आधार पर राज्य के चीरे व परगने भी उनकी भूमि की उर्वर – शक्ति के आधार पर कई क्षेत्रों में बांट दिये गये थे। उत्तरी क्षेत्र, उत्तर-पूर्व क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, दक्षिणी क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र, उत्तर-पश्चिम क्षेत्र इत्यादि राज्य को भूमिकर या हासल के रूप में आय प्राप्त होती थी। भू-राजस्व पद्धति व हासल का निर्धारण, भूमि की उपजाऊ शक्ति, प्रशासनिक ढांचे तथा काश्तकार की जाति के आधार पर मुख्य तौर पर होता था। ऊंचे वर्ण की जातियाँ रियायती दरों पर लगान चुकाती थीं, वैसी ही स्थिति 'कमीनान् की थी। करों का पूरा बोझ कृषक जातियों पर पड़ता था । शासकीय जाति व चारण तो करमुक्त खेती करते थे।

बीकानेर के गांव में भू-राजस्व की व्यवस्था कब्जा चौधरीयाना, कब्जा असामियान, कब्जा कार्मनान, कब्जा अचरान द्वारा होती थी। गांव मुख्य रूप से तीन भागों में बंटे हुए थे। 1. खालसा गांव जो सीधे

राज्य के नियन्त्रण में होते थे। 2. पट्टे के गांव, जो पट्टेदार के अधीन होते थे। 3. सासन के गांव जो अनुदान स्वरूप होते थे। गांव में राजस्व वसूली करने के लिए चौधरी, पटवारी, हुवलदार एवं कामदारों के द्वारा वसूला जाता था।

इस प्रकार गांवों का रूप जो पहले जातीय व्यवस्था पर आधारित था धीरे-धीरे प्राकृतिक विपदाओं प्रशासनिक सुविधाओं, सामान्तवादी व्यवस्था व शासक की नीतयों के कारण परिवर्तित होता गया जिसमें पट्टेदार चौधरी, हवालदार व शासक का नियन्त्रण बढ़ता गया। 18वीं शताब्दी में आंतरिक संकटों, गलत प्रशासकीय नीतियों, मुकाता व्यवस्था के प्रचलन व बाहरी आक्रमणों से इनकी शक्तियां और बढ़ गई। अब बौधरियों ने बहुत सी भूमि हड़प ली. हुबालदार ठेकेदार बन गये, चौधरियों के रिश्तेदार कर मुक्त हो गये और श्रमिकों व कृषकों पर करों का दबाव बढ़ता गया। परिणामस्वरूप रैय्यत गांव छोड़कर भागने लगे और महाराज सूरतसिंह जी के समय 3,000 में से केवल 1,814 गांव रह गये। सैनिक मांगों के दबाव ने गांवों पर करों का भार अत्यधिक बढ़ा दिया था व गांवों पर सैनिक अधिकारियों का नियंत्रण कसने लगा था जिससे गांवों की व्यवस्था व स्वरूप को धक्का पहुंचा।

राज्य में आन्तरिक व्यापार व बाह्य दोनों व्यापार का प्रचलन था। राज्य के एक कस्बे से दूसरे कस्बे के साथ व्यापार होता था। राज्य की क्षेत्र विस्तार ओर व्यापारिक नीतियों के कारण 18वीं शताब्दी में नये करबों अनूपगढ़, सुजागढ़, राजगढ़, सूरतगढ़ इत्यादि कस्बों की स्थापना हुई।राज्य की व्यापारिक प्रोत्साहन नीति ने राज्य में व्यापार का विकास कर अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार प्रदान किया।

बीकानेर राज्य की सांस्कृतिक दशा का अध्ययन

बीकानेर राज्य की संस्कृति अपने आप में अत्यधिक विशिष्ट रूप रखती है। यहां की वास्तुकला का अर्थ भवनों के विन्यास, आकलन , संरचना, कला, विज्ञान, तकनीकी तथा मानव की रूचि और आवश्यकता के अनुसार तर्कसं ।गत एवं बुद्धि संगत निर्माण की कला एवं शिल्प विज्ञान से है। वास्तुकला ललितकला की वह शाखा है जिसका उद्देश्य औद्योगिकी का सहयोग लेते हुए उपयोगिता की दृष्टि से उत्तम भवन निर्माण करना है, जिनके पर्यावरण सुसंस्कृत एवं कलात्मक रूचि के लिए अत्यंत प्रिय सौन्दर्य - भावना के पोषक तथा आनन्दकार एवं आनन्दवर्धक हों। प्रकृति, बुद्धि एवं रूचि द्वारा निर्धारित और नियमित कतिमय सिद्धान्तों और अनुपातों के अनुसार रचना करना इस कला का एक अंग है।

भवन निर्माण एवं शिल्प की उत्कृष्टता के साक्ष्य राजस्थान में मानव की विकास यात्रा के साथ साथ दृष्टिगोचर होते हैं। कालीबंगा, मिलूण्ड, बैराठ, आहड़, वोह नगरी आदि राजस्थान के पुरातात्विक स्थल है, जहां विभिन्न आवासों का निर्माण हुआ। स्थापत्य एवं रक्षा की दृष्टि से राजस्थान के ऐतिहासिक भवन जिनका निर्माण मध्य काल में हुआ था स्वयं में बेजोड़ है। वहां विभिन्न स्थानों पर स्थित मध्यकालीन किले, मंदिर राजप्रसाद, बावड़िया एवं भवन आदि के समन्वयात्मक चित्रण प्रस्तुत होते हैं। स्थापत्य कला का वैविध्य राजस्थान की वास्तुकला की विशेषता है।

जूनागढ़ का किला

जूनागढ़ का किला राजस्थान के बीकानेर राज्य में स्थित है, जिसका अर्थ है पुराना किला। इस किले का निर्माण बीकानेर के शासक राव बीका ने कराया था। जिस पर अनेक बार शत्रुओं के द्वारा आक्रमण किए गए लेकिन फिर भी शत्रु इस पर अपना अधिकार नहीं कर पाए। मात्र कामरान मिर्जा के द्वारा इस पर 1 दिन के लिए कब्जा किया गया था जिसे राठौरों ने परास्त करके अपने कब्जे में ले लिया था। जूनागढ़ किले के भीतर बनी संरचनाओं में महल और मंदिर शामिल हैं जिनका निर्माण लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर द्वारा किया गया है। इन महलों का वर्गीकरण अनोखे आंगनों, छज्जों, खोखे और खिड़कियों द्वारा किया जाता है। किले के मंदिरों और महलों को संग्रहालय के रूप में संरक्षित कर दिया गया है। इस किले को मध्ययुगीन सैन्य वास्तुकला और सुंदर आंतरिक सजावट के बीच एक विरोधाभास के नाम से भी जाना जाता है।

करण महल

करण महल जिसे सार्वजानिक सभा कक्ष भी कहा जाता है, बीकानेर का पहला स्मारक और राजपूताना का दूसरा सबसे पुराना स्मारक है, जो क्लासिक मुगल शैली पर आधारित है। इसका निर्माण राजा करण सिंह के द्वारा 1680 ई. में कराया गया था। सफेद संगमरमर और प्लास्टर डिजाइजन की शुद्धता और विस्तार के मामले में यह महल मुगल शैली के समकक्ष है। इसके सुन्दर डिज़ाइन दिल्ली के दिवान-ए-खास, रंग महल और मुमताज महल जैसी क्लासिक कला की विशेषता इसमें दिखाई देती है।

फूल महल

फूल महल इस किले का सबसे पुराना भाग है और इसका निर्माण बीकानेर के राजा राय सिंह (1574-1612 ई.) ने करवाया था। 2" यह महल राजसिंह की रानी फूल कौर के नाम से बनाया गया था। अनूप सिंह तथा सुजान सिंह के शासन काल में इस महल में प्लास्टर पैनल लगवाये ताकि दर्पण के द्वारा अन्धकार के भाग को बांटा जा सके।" इस प्लास्टर पैनल पर बोतलों को कप-कटोरों द्वारा चित्रित किया गया है। जिन पर फूलों की सुन्दर चित्रकारी की गई है। छोटे फूल के आकार के दर्पण को भीतरी पैनल के ढांचे में रखा गया है, जो काफी सुन्दर लगता है।

अनूप महल –

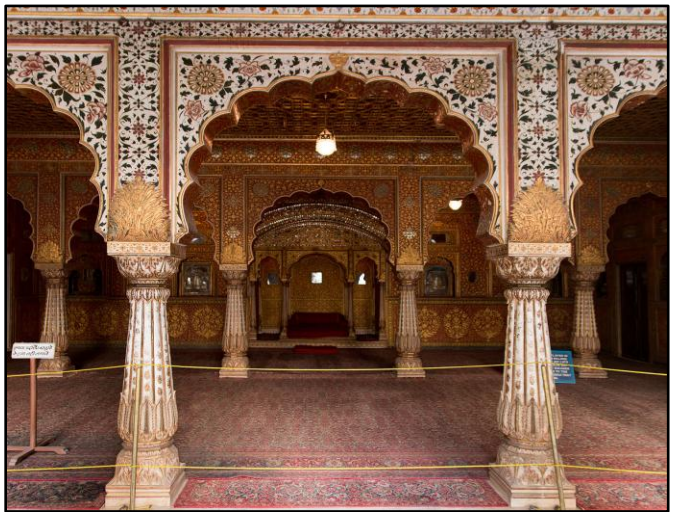

यह बीकानेर किले का सर्वाधिक अंलकृत और सुशोभित हिस्सा है। अनूपमहल महाराज अनूपसिंह का दरबार-ए-खास था जहाँ वे विशिष्ट अतिथियों से मिला करते थे। समूचा महल, छते तथा खम्भों पर सोने का जड़ाऊ काम हुआ है इसलिए यह सबसे अलंकृत महल है।

जूनागढ़ किला – अनूप महल

बीकानेर में एक नई कला शैली का उद्भव हुआ। इस कला शैली को उस्ता कला कहा जाने लगा। इस कला शैली का प्रभाव 18वीं शताब्दी की बीकानेर चित्रकला शैली पर स्पष्ट दिखाई देता है। इस महल में एक लकड़ी की दीवार है, जिस पर सूक्ष्म चित्रकारी की गयी है। राजस्थान में स्थित होने के कारण इन कलाकृतियों में कांच का भरपूर समावेश है। इस महल को बाहर से देखने पर यह सादा व श्वेत रंग का प्रतीत होता है।

धार्मिक वास्तु कला के अन्तर्गत मंदिर निर्माण कला का एक महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन भारतीय साहित्य में मंदिर निर्माण संबंधी विविध उल्लेख प्राप्त होते हैं। बीकानेर के जैन जिनालयों में भांडाशाह, चिंतामणि एवं नेमिनाथ मंदिर स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यद्यपि इन मन्दिरों का निर्माण 18वीं शताब्दी में नहीं हुआ लेकिन 18वीं शताब्दी के बहियों में इनकी मरम्मत का कार्य अवश्य उल्लेखित है।

भांडाशाह जैन मन्दिर

बीकानेर का सर्वाधिक प्राचीन मंदिर भांडाशाह जैन मंदिर है, जिसे एक धनिक व्यापारी सेठ भांडाशाह द्वारा निर्मित करवाया गया।" बीकानेर दक्षिणी पार्श्व में लक्ष्मीनाथ मंदिर के पिछले हिस्से में स्थित यह तीन मंजिला जिनालय बीकानेर का सबसे ऊँचा मंदिर है। जो खारी गांव के लाल पत्थर तथा जैसलमेरी के पीले पत्थर से निर्मित है। मंदिर का शिखर अन्य छोटे-छोटे शिखरों से सुसज्जित है। प्रदक्षिणा पथ की दीवारें नृत्य भंगिमा में लिप्त पुतलिकाओं व पुरुष मूर्तियों से सुसज्जित हैं। मुख्य गर्भगृह बीकानेर की स्थानीय उस्ता-कला कार्य से और अधिक आकर्षक प्रतीत होता है, जैन मन्दिर भांडाशाह पर गुजरात की बेसर शैली का प्रभाव है जो बीकानेर की संस्कृति का विशेष उदाहरण है।

स्थापत्य की दृष्टि से उल्लेखनीय उदाहरण श्री चिंतामणि जैन मंदिर है जिसका निर्माण बीकानेर के संस्थापक राव बीका के समय हुआ था। इसके अतिरिक्त करणी माता का मन्दिर भी वास्तुकला का अच्छा उदाहरण है जिसका दक्षिणी भाग अकबरी मुगल काल का प्रतिनिधित्व करता है। देवीकुण्डसागर में बनी छतरी फतेहपुर सीकरी शैली का सुन्दर उदाहरण है। बीकानेर शहर की पूर्व दिशा में स्थित कल्याणसागर देवीकुंडसागर से पहले का बना हुआ तालाब है। इसके तट पर बीकानेर राजघराने की शमशान भूमि है जहां पर आज भी राज परिवार के दिवंगत व्यक्तियों की स्मृति में स्मारक लेख उत्कीर्ण हैं। इसके साथ ही बीकानेर की पाटा संस्कृति जिसका उद्भव बीकानेर में 18वीं शताब्दी के दौरान हुआ था अत्यधिक व्यापक रूप को धारण किए हुए है। पाटा सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से बीकानेर शहर की नियामक इकाई है, जिस पर अनेक परम्पराएं एवं रीति-रिवाज सम्पन्न होते थे। यहाँ के लोगों में इसकी बड़ी मान्यता थी, क्योंकि जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी संस्कार इस पर पूरे किए जाते थे। यहाँ तक कि जब कोई 80 वर्ष की स्त्री पाटों के सामने से गुजरती थी तो वह घूंघट अवश्य करती थी। इसका कारण यह था कि स्त्रियां पाटों में अपने दादा और ससुर की पहचान मानती थीं।

बीकानेर की संस्कृति को उत्कृष्ट स्वरूप प्रदान करने वाली यहां की चित्रकला की शुरुआत तेरहवीं शताब्दी के आरंभ से मानी जाती है। इसका केंद्र पंजाब, हिमाचल और राजस्थान था। सल्तनत काल में चित्रकला का ज्यादा विकास नहीं हुआ क्योंकि सुल्तान इसे धर्म विरुद्ध मानते थे। लेकिन भारत में मुगलों के आगमन के साथ चित्रकला के एक नए युग की शुरुआत हुई। राजस्थानी शैली का भारत की चित्रकला में एक अद्वितीय स्थान है। भारत को चित्रकला में जो समृद्धि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिली है वह राजस्थानी शैली के कारण ही संभव हो पाई है। राजस्थानी शैली के चित्रों में हमें भारत की उस शास्त्रीय पद्धति के दर्शन होते हैं जिसमें दृष्टि विज्ञान और सौंदर्य निरीक्षण का बड़ा ही मार्मिक विश्लेषण है। यहां की चित्रकला में 18वीं शताब्दी के आरम्भ की विशेषता यह रही कि इसमें युद्ध संबंधित एवं महिला संबंधित चित्रों की प्रधानता रही। जिन पर स्पष्ट रूप से मुगल प्रभाव दिखाई देता है। रुक्नूद्दीन जैसे मुगल कलाकारों को बीकानेर ने संरक्षण प्रदान किया। इन कलाकारों ने यहाँ की चित्रकला को गति प्रदान की। लेकिन मुगल साम्राज्य के पतन के बाद धीरे-धीरे बीकानेर शैली से विदेशी प्रभाव मिट गया और वह हिन्दू शैली के चित्रों में मिल गया। फलस्वरूप रंगों के विधानों में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। यहाँ की संस्कृति पर विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों का प्रभाव था। इसमें बिश्नोई, रामस्नेही, करणी माता तथा जसनाथी प्रमुख थे। जनता इन सम्प्रदायों की परस्परा से प्रभावित थी। इन सम्प्रदायों में जसनाथी मुख्य था जसनाथी सम्प्रदाय ने महाराजा सूरत सिंह के समय में अपनी जमीयतें बना सैनिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया था यहाँ के सांस्कृतिक जीवन में त्यौहारों का विशेष महत्त्व था गणगौर, रक्षा बन्धन, तीज, दशहरा, दीपावली, मकर संक्रान्ति, होली, बसंत पंचमी आदि त्यौहार लोकप्रिय थे।

निष्कर्ष

अन्त में कहा जा सकता है कि 18वीं शताब्दी के केन्द्रीय सत्ता की परिस्थितियों में अपनी सफल कूटनीति के कारण बीकानेर राज्य अपने आप को स्थापित करने में कामयाब रहा। अपितु मुगलों से संबंध बनाते हुए व जोधपुर से संघर्ष करते हुए न केवल राज्य में शान्ति स्थापित की अपितु राज्य को क्षेत्रीय विस्तार भी दिया। 18वीं शताब्दी की परिस्थितियों का प्रभाव यहाँ के सामाजिक जीवन पर भी देखने को मिलता है। जातिय धंधों में बदलाव के कारण यहाँ व्यापक पैमाने पर जातिय गतिशीलता देखने को मिलती है। राज्य द्वारा यहाँ की कृषि के लिए विपरीत भौगोलिक स्थिति को देखते हुए तथा राज्य की आर्थिक दशा को सुदृढ़ करने व भू-राजस्व की कमी को दूर करने के लिए वाणिज्य एवं व्यापार को प्रोत्साहन दिया गया। जिसके लाभ ने यहाँ की अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार प्रदान किया। यहाँ के सांस्कृतिक जीवन को यहाँ के धार्मिक सम्प्रदायों ने काफी प्रभावित किया। इन सम्प्रदायों के सन्तों ने यहाँ लोक देवताओं का रूप ले लिया और उन्हीं के नाम पर यहाँ पर विभिन्न मेलों और त्यौहारों की परम्परा शुरू हुई, जिसका प्रभाव यहाँ की वास्तुकला और चित्रकला में भी देखने को मिलता है। इन्हीं के कारण यहाँ की कला से मुगल प्रभाव धीरे-धीरे कम होता चला गया। इस प्रकार बीकानेर 18वीं शताब्दी में अपना प्रभाव छोड़ते हुए 19वीं शताब्दी में प्रवेश कर गया।

REFERENCES

1. ओझा,- बीकानेर राज्य का इतिहास भाग-1।

2. मुंशी सोहनलाल,- त्वारीख राजश्री बीकानेर।

3. राठौड़, अमरसिंह,- बीकानेर री कहावतें, एक अध्ययन राठौड़ प्रकाशन, बीकानेर, 1870.

4. के. के. सहगल,- राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर बीकानेर स्टेट, जयपुर, 1972.

5. जी. एस. एल. देवड़ा,- राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था, धरती प्रकाशन, बीकानेर, 1980.

6. गिरिजा शंकर शर्मा,- राजस्थान राजकीय अभिलेखागार, बीकानेर 1989.

7. जी. एन. शर्मा,- राजस्थान थ्रू द ऐज।

8. टॉड कृत- बीकानेर राज्य का इतिहास।

9. देवेन्द्रसिंह गहलोत, - राजस्थान का सामाजिक इतिहास, जोधपुर ग्रंथागार 1982.

10. शर्मा, जी.एन. - सोशल लाईफ इन मीडिवल राजस्थान।

11. जी.एस.एल. देवड़ा -सोशियो इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ राजस्थान ।

12. मोहन लाल गुप्ता- बीकानेर : जिलेवार सांस्कृतिक इतिहास।

13. नाथ आर, - मध्यकालीन भारतीय कलाएं एवं उनका विकास, राजस्थान ग्रंथ अकादमी, जयपुर।